

---

Shriramastuti by Tulasidasa

—  
तुलसीदासकृता श्रीरामस्तुतिः  
—

Document Information



---

Text title : rAmastuti 3 (tulasIdAsa)

File name : rAmastuti.itx

Category : raama, stotra

Location : doc\_raama

Transliterated by : Girish Beeharry

Proofread by : Girish Beeharry

Latest update : November 1, 2010

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 1, 2024

*sanskritdocuments.org*


---




तुलसीदासकृता श्रीरामस्तुतिः



श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् ।  
नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जारुणम् ॥ १ ॥  
कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम् ।  
पटपीत पानहुँ तडित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥ २ ॥  
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनम् ।  
रघुनन्द आनंदकंद कोशल चन्द दशरथ नन्दनम् ॥ ३ ॥  
सिरक्रीट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणम् ।  
आजानुभुज सर चापधर सङ्ग्राम जित खरदूषणम् ॥ ४ ॥  
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनम् ।  
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलमञ्जनम् ॥ ५ ॥  
मन जाहि राचो मिलहि सोवर सहजसुन्दर सांवरो ।  
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥ ६ ॥  
एहि भाँति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।  
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥ ७ ॥  
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्षनः जात कहि ।  
मञ्जुल मङ्गल मूल वाम अङ्ग परकन लगे ॥  
सियावर रामचन्द्र पद गहि रहूँ ।  
उमावर शम्भुनाथ पद गहि रहूँ ।  
महाविर बजरङ्गी पद गहि रहूँ ।  
शरणा गतो हरि ॥

——  
*Shriramastuti by Tulasidasa*

pdf was typeset on September 1, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

